श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

॥ श्री-सुदर्शनाष्टकम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

॥ श्री-सुदर्शनाष्टकम् ॥

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

प्रतिभट श्रेणि भीषण
जनि भय स्थान तारण
निखिल दुष्कर्म कर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन

वर गुण स्तोम भूषण
जगदवस्थान कारण।
निगम सद्धर्म दर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन॥ १॥

शुभ जगद्रूप मण्डन
शतमख ब्रह्म वन्दित
प्रथित विद्वत्सपक्षित
जय जय श्रीसुदर्शन

सुर गण त्रास खण्डन
शतपथ ब्रह्म नन्दित।
भजदहिर्बुध्न्य लक्षित
जय जय श्रीसुदर्शन॥ २॥

स्फुट तटिज्जाल पिञ्जर
परिगत प्रह्न विग्रह
प्रहरण ग्राम मण्डित
जय जय श्रीसुदर्शन

पृथुतर ज्वाल पञ्जर
पटुतर प्रज्ञ दुर्ग्रह।
परिजन त्राण पण्डित
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ३॥

निज पद प्रीत सद्गण
निगम निर्व्यूढ वैभव
हरि हय द्वेषि दारण
जय जय श्रीसुदर्शन

निरुपधि स्फीत षड्गुण
निज पर व्यूह वैभव।
हर पुर प्लोष कारण
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ४॥

दनुज विस्तार कर्तन
दनुज विद्या निकर्तन
अमर दृष्ट स्व विक्रम
जय जय श्रीसुदर्शन

जनि तमिस्रा विकर्तन
भजदविद्या निवर्तन।
समर जुष्ट भ्रमि क्रम
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ५॥

प्रतिमुखालीढ बन्धुर
विकट माया बहिष्कृत
स्थिर महायन्त्र तन्त्रित
जय जय श्रीसुदर्शन

पृथु महा हेति दन्तुर
विविध माला परिष्कृत।
दृढ दया तन्त्र यन्त्रित
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ६ ॥

महित संपत्सदक्षर
षडर चक्र प्रतिष्ठित
विविध सङ्कल्प कल्पक
जय जय श्रीसुदर्शन

विहित संपत्षडक्षर
सकल तत्त्व प्रतिष्ठित।
विबुध सङ्कल्प कल्पक
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ७ ॥

भुवन नेत्र त्रयीमय
निरवधि स्वादु चिन्मय
अमित विश्व क्रियामय
जय जय श्रीसुदर्शन

सवन तेजस्त्रयीमय
निखिल शक्ते जगन्मय।
शमित विष्वग्भयामय
जय जय श्रीसुदर्शन॥ ८ ॥

द्विचतुष्कमिदं प्रभूत सारं पठतां वेङ्कटनायक प्रणीतम्।
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन् न विहन्येत रथाङ्ग धुर्य गुप्तः॥ ९ ॥

॥ इति श्री-सुदर्शनाष्टकम् समाप्तम्॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः॥